International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2024; 6(6): 56-60
Received: 25-04-2024
Accepted: 02-06-2024

मनीष कुमार सैनी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान, भारत

डॉ. लाल कृष्ण शर्मा
शोध निदेशक, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान, भारत

\

Corresponding Author:
मनीष कुमार सैनी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान, भारत

राजस्थान के नीमकाथाना जिले में पंचायतीराज व्यवस्थाः महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास एवं राजनीतिक नेतृत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनीष कुमार सैनी, लाल कृष्ण शर्मा

सारांश
यह शोध पत्र राजस्थान के नीमकाथाना जिले में पंचायतीराज व्यवस्था में महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास एवं राजनीतिक नेतृत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस शोध में 325 महिला जनप्रतिनिधियों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। शोध से पता चलता है कि अधिकांश महिला प्रतिनिधि युवा वर्ग से हैं और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं। सामाजिक वर्गीकरण में सामान्य वर्ग का प्रतिनिधित्व सर्वाधिक है। महिला जनप्रतिनिधियों में पंचायतीराज की आय के स्रोतों के बारे में जागरूकता सर्वाधिक है, जबकि पंचायती राज अधिनियम का ज्ञान न्यूनतम है। अधिकांश महिला जनप्रतिनिधियों के परिवार में राजनीतिक पृष्ठभूमि है, जिसमें राजनीतिक दल सदस्यता प्रमुख है। आत्म प्रेरणा और पारिवारिक समर्थन महिला प्रतिनिधियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक तत्व हैं।

कुटशब्दः पंचायतीराज व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, राजनीतिक भागीदारी, आर्थिक विकास, महिला नेतृत्व।

प्रस्तावना
भारत में पंचायत की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है। आधुनिक पंचायत व्यवस्था की जड़ें चौपाल, जाति पंचायत और परिवार पंचायत जैसी संस्थाओं में निहित थी, जिसके प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता से भी प्राप्त होते हैं। भारत की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा महिलाएं हैं और देश का समग्र विकास उनकी सक्रिय भागीदारी के बिना असंभव है। प्राचीन काल से ही भारतीय महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया है। वे घरेलू जिम्मेदारियों के साथ–साथ खेतों, कारखानों और अस्पतालों में भी महत्वपूर्ण योगदान देती आई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता प्रसार, युवाओं के लिए रोजगार सृजन, पेयजल व्यवस्था या कृषि संरक्षण जैसे कार्यों में ग्रामीण महिलाएं सामूहिक सहयोग से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जनसंख्या नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण, पोषण प्रबंधन और स्थानीय संसाधनों के कुशल उपयोग में भी उनका नेतृत्व महत्वपूर्ण है।
पंचायतीराज व्यवस्था शक्तियों के विकेंद्रीकरण का एक माध्यम है, जिसमें प्रशासनिक शक्तियों का विभाजन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। इसका उद्देश्य राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र में विकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले से इस व्यवस्था का शुभारंभ किया, जिसके बाद 11 अक्टूबर 1959 को आंध्र प्रदेश में भी इसकी शुरुआत हुई। तत्पश्चात अन्य राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में भी इस व्यवस्था को लागू किया गया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

साहित्य समीक्षाः
अब्राहम (2019) ने अपने शोधपत्र में पाया कि ग्रामीण रोजगार परिदृश्य में होने वाले परिवर्तन संकट–प्रेरित रोजगार की ओर संकेत करते हैं। कृषि संकटग्रस्त क्षेत्रों में कार्य की स्थिति में महिला श्रम की अधिकता, उच्च बेरोजगारी दर और अवैतनिक श्रम पर निर्भरता दिखाई देती है। ये प्रवृत्तियां ग्रामीण भारत में रोजगार वृद्धि को संकट और गरीबी से जोड़ती हैं। हालांकि, पंचायतीराज के विकास ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ किया है। जी. थॉमस (2017) ने अपने अध्ययन में बताया कि विशाल जनसंख्या वाले देश में लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी केवल जमीनी स्तर पर ही संभव है। लोग अपने सामूहिक प्रयासों और सामान्य आवाज के माध्यम से उच्च स्तरीय निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। वर्तमान टॉप–डाउन दृष्टिकोण को बदलकर बॉटम–अप दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी हो।
मुखर्जी (2016) ने अपनी पुस्तक में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के दो गांवों – कृषक रक्षित चक और कालसिंगरिया का उदाहरण देते हुए दर्शाया कि लैंगिक समानता गरीबी और कल्याण को कैसे प्रभावित करती है।

उन्होंने सिद्ध किया कि गरीब परिवारों की महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। पटनायक (2018) ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ग्रामीण महिलाएं महत्वपूर्ण मानव संसाधन हैं और उनका सशक्तिकरण आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास को गति प्रदान करेगा। महिलाओं की क्षमताओं में निवेश और उन्हें विकल्प एवं अवसर प्रदान करना समग्र विकास का सर्वोत्तम मार्ग है।

भटनागर (2018) ने अपनी पुस्तक में बताया कि आधुनिक पंचायतीराज संस्थाएं जमीनी स्तर पर विकेंद्रीकरण का प्रमुख माध्यम हैं। ये लोगों को स्व–शासन का अधिकार प्रदान करती हैं और ग्राम सभा के माध्यम से प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर देती हैं। अहमद (2015) ने अपनी पुस्तक में दर्शाया कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश महिलाएं कृषि क्षेत्र में श्रमिक या किसान के रूप में कार्यरत हैं। शहरी क्षेत्रों में, वे मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में कार्य करती हैं।

एम. वेंकटरमन (2014) ने अपने लेख में लिखा है कि महिलाओं को इस प्रकार सशक्त बनाने की आवश्यकता है जो उन्हें स्वयं के लिए योजना बनाने में सक्षम बनाए। सतत विकास के लिए उनकी छिपी क्षमताओं को नियोजित तरीके से सामने लाना आवश्यक है। सिसोदिया (2022) के मध्यप्रदेश में किए गए अध्ययन से पता चला है कि पहले महिलाओं को वंचित वर्ग माना जाता था और उनका लोकतांत्रिक प्रक्रिया में प्रतिनिधित्व नगण्य था। यह धारणा अब बदल रही है और बड़ी संख्या में महिलाएं पंचायत चुनावों में भाग ले रही हैं।

मिश्रा और सिंह (2021) ने अपने विश्लेषणात्मक शोध में पाया कि पंचायती राज संस्थाओं में महिला सरपंचों की बढ़ती संख्या ने ग्रामीण विकास को नई दिशा दी है। उनके अध्ययन ने उत्तरप्रदेश के पांच जिलों में 200 महिला सरपंचों के कार्यों का विश्लेषण किया और पाया कि 65 प्रतिशत महिला नेतृत्व वाली पंचायतों में स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। राजेश्वरी (2020) ने अपने शोधपत्र में तमिलनाडु की ग्राम पंचायतों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि महिला प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी ने ग्रामीण समाज में गहरे सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित किया है। विशेष रूप से, बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध महिला नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कुमार और गुप्ता (2023) द्वारा प्रकाशित शोध में बताया गया है कि आधुनिक तकनीक के प्रयोग से ग्राम पंचायतों की कार्यक्षमता में वृद्धि हुई है। उनके अनुसार, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों में महिला प्रतिनिधियों की भागीदारी ने ई–गवर्नेंस को मजबूती प्रदान की है और पारदर्शिता में वृद्धि की है। चौधरी (2022) ने अपने अध्ययन में दर्शाया कि पंचायती राज संस्थाओं द्वारा प्रोत्साहित स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाया है। उनके अनुसार, पिछले पांच वर्षों में महिला उद्यमियों की संख्या में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

शर्मा और वर्मा (2021) ने बताया कि महिला प्रतिनिधियों को अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने राजस्थान के छह जिलों का अध्ययन किया और पाया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों और क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। साथ ही, सामाजिक और पारिवारिक समर्थन की कमी एक प्रमुख बाधा के रूप में सामने आई है।

अध्ययन क्षेत्रः

इस शोध का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य का नीमकाथाना जिला है, जो राजस्थान के ढूंढाड़ क्षेत्र में सीकर शहर से 73 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा 17 मार्च 2023 को नीमकाथाना को जिला घोषित किया गया, जिसका औपचारिक उद्घाटन 7 अगस्त 2023 को किया गया और इसे मानचित्र पर अंकित किया गया। नीमकाथाना जिले में कुल पाँच तहसीलें हैं, जिनमें से उदयपुरवाटी और खेतड़ी तहसील झुंझुनू जिले से, जबकि नीमकाथाना, श्रीमाधोपुर और पाटन तहसील सीकर जिले से ली गई हैं। अध्ययन हेतु नीमकाथाना जिले की पंचायतीराज संस्थाओं को चयनित किया गया है। पंचायतीराज संस्थाओं की महिला जनप्रतिनिधियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें सरपंच, पंचायत समिति सदस्य एवं जिला परिषद सदस्य शामिल हैं।

शोध प्रविधिः

इस शोध में विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक एवं अनुभवमूलक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इस शोध में नीमकाथाना जिले की विभिन्न पंचायतीराज संस्थाओं से आने वाली 325 सरपंच, पंचायत समिति सदस्य एवं जिला परिषद सदस्य शामिल हैं। नीमकाथाना जिले के इन उत्तरदाताओं से एक नियोजित प्रश्नावली के माध्यम से विभिन्न प्रश्नों की सहायता से उत्तरों का संकलन किया गया है। प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का वर्णात्मक सांख्यिकी द्वारा विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के लिए संबंधित पुस्तकों, लेखों, संदर्भ ग्रंथों, सरकारी प्रतिवेदनों एवं पत्र–पत्रिकाओं आदि का उपयोग किया गया है। राजस्थान की पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता का विश्लेषण नीमकाथाना जिले के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य, लेखों एवं अन्य सामग्री के आधार पर किया गया है। समसामयिक संदर्भ में इस अध्ययन की प्रासंगिकता को रेखांकित करने के लिए अनुभवमूलक पद्धति का प्रयोग किया किया गया है, जिससे शोध से प्राप्त निष्कर्षों को समय की कसौटी पर खरा उतारा जा सके और शोध कार्य तर्कसंगत हो सके।

आंकड़ों का विश्लेषणः

प्रस्तुत तालिका में महिला प्रतिनिधियों का आयु के आधार पर विभाजन तीन प्रमुख श्रेणियों में किया गया है। कुल 325 महिला प्रतिनिधियों में से सबसे बड़ा समूह युवा वर्ग (18–35 वर्ष) का है, जिसमें 150 महिलाएं शामिल हैं, जो समग्र का 46.16 प्रतिशत है। मध्यम आयु वर्ग (35–50 वर्ष) में 120 महिला प्रतिनिधि हैं, जो समग्र का 36.92 प्रतिशत है। वरिष्ठ आयु वर्ग (50 वर्ष से अधिक) में सबसे कम संख्या है, जिसमें केवल 55 महिला प्रतिनिधि शामिल हैं, जो समग्र का 16.92 प्रतिशत है। यह आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों में युवा वर्ग का प्रभुत्व है, जबकि वरिष्ठ आयु वर्ग का प्रतिनिधित्व तुलनात्मक रूप से कम है। यह प्रवृत्ति राजनीतिक क्षेत्र में युवा महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का संकेत देती है।

तालिका 1: महिला प्रतिनिधियों का आयु के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
युवा वर्ग (18–35 वर्ष)	150	46.16
मध्यम आयु वर्ग (35–50 वर्ष)	120	36.92
वरिष्ठ आयु वर्ग (50 वर्ष से अधिक)	55	16.92
कुल	325	100

निम्नलिखित तालिका में महिला प्रतिनिधियों का उनकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर विभाजन किया गया है। इसमें निरक्षर महिला प्रतिनिधियों की संख्या 24 है, जो कुल का 7.38 प्रतिशत है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिला प्रतिनिधियों की संख्या 145 है, जो कुल का 44.62 प्रतिशत है। उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिला प्रतिनिधियों की संख्या 67 है, जो कुल का 20.62 प्रतिशत है। स्नातक शिक्षा प्राप्त महिला प्रतिनिधियों की संख्या 79 है, जो

कुल का 24.30 प्रतिशत है, जबकि स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त महिला प्रतिनिधियों की संख्या 10 है, जो कुल का 3.08 प्रतिशत है। इस प्रकार, अधिकांश महिला प्रतिनिधि माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं, जबकि उच्च शिक्षा के स्तर पर संख्या अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 2: महिला प्रतिनिधियों का शिक्षा स्तर का वर्गीकरण

शिक्षा स्तर	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	24	7.38
माध्यमिक	145	44.62
उच्च माध्यमिक	67	20.62
स्नातक	79	24.30
स्नातकोत्तर	10	3.08
कुल	325	100

निम्नलिखित तालिका में महिला प्रतिनिधियों का उनके सामाजिक वर्ग के आधार पर विभाजन किया गया है। इसमें सामान्य वर्ग के अंतर्गत 156 महिला प्रतिनिधि शामिल हैं, अन्य पिछड़ा वर्ग में 57 महिला प्रतिनिधि शामिल हैं, अनुसूचित जाति वर्ग में 51 महिला प्रतिनिधि शामिल हैं, अनुसूचित जनजाति वर्ग में 61 महिला प्रतिनिधि शामिल हैं। यह स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के महिला प्रतिनिधियों की संख्या सबसे अधिक है, जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति एवं जनजाति के महिला प्रतिनिधियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 3: महिला प्रतिनिधियों का सामाजिक वर्गीकरण

सामाजिक वर्ग	संख्या	प्रतिशत
सामान्य वर्ग	156	48
अन्य पिछड़ा वर्ग	57	17.53
अनुसूचित जाति वर्ग	51	15.70
अनुसूचित जनजाति वर्ग	61	18.77
कुल	325	100

निम्नलिखित तालिका में महिला प्रतिनिधियों का उनके व्यवसाय के आधार पर विभाजन किया गया है। कृषि क्षेत्र में 154 महिला प्रतिनिधि कार्यरत हैं जो दर्शाता है कि कृषि सबसे प्रमुख कार्य है और महिला प्रतिनिधियों की बड़ी संख्या इस क्षेत्र में संलग्न है। निजी नौकरी में 65 महिला प्रतिनिधि कार्यरत हैं, सरकारी नौकरी में 59 महिला प्रतिनिधि कार्यरत हैं, पशुपालन क्षेत्र में 47 महिला प्रतिनिधि कार्यरत हैं। यह स्पष्ट है कि महिला प्रतिनिधियों में कृषि और निजी नौकरी प्रमुख कार्य क्षेत्र हैं, जबकि सरकारी नौकरी और पशुपालन अपेक्षाकृत कम लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

तालिका 4: महिला प्रतिनिधियों का व्यासायिक वर्गीकरण

व्यवसाय–वर्ग	संख्या	प्रतिशत
कृषि	154	47.38
सरकारी नौकरी	59	18.16
निजी नौकरी	65	20.00
पशुपालन	47	14.46
कुल	325	100

प्रस्तुत तालिका में पंचायतीराज से संबंधित विभिन्न विषयों पर महिला प्रतिनिधियों की जागरूकता का विश्लेषण किया गया है। केवल 30 (9.23 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों को पंचायती राज अधिनियम (73वां संशोधन) का ज्ञान है, जो दर्शाता है कि इस महत्वपूर्ण विषय पर जागरूकता बहुत कम है। दूसरी ओर, पंचायतीराज की आय के स्रोत के बारे में 149 (45.85 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि जानते हैं, जो यह संकेत करता है कि अधिकांश महिला प्रतिनिधी पंचायतीराज के वित्तीय पहलुओं को समझते हैं और यह जानकारी उनके लिए महत्वपूर्ण है।

तालिका 5: पंचायतीराज पर महिला प्रतिनिधियों की जागरूकता

विषय	संख्या	प्रतिशत
पंचायती राज अधिनियम का ज्ञान (73वां संशोधन)	30	9.23
पंचायतों की आय के स्रोत	149	45.85
पंचायतों की शक्तियाँ और कार्य	75	23.07
पंचायती राज व्यवस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षित सीट	71	21.85
कुल	325	100

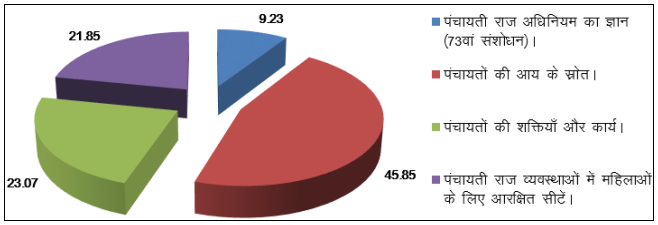

चित्र 1: पंचायतीराज से संबंधित विभिन्न विषयों पर महिला प्रतिनिधियों की जागरूकता (प्रतिशत)

पंचायतीराज की शक्तियाँ और कार्य के बारे में 75 (23.07 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि अवगत हैं, इसके अलावा, पंचायती राज व्यवस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षित सीट के बारे में 71 (21.85 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों को ज्ञान है, जो यह दर्शाता है कि महिलाएं पंचायतों में अपनी भागीदारी को लेकर जागरूक हैं, लेकिन इस क्षेत्र में और अधिक जानकारी की आवश्यकता है। इस प्रकार, पंचायतों के आय के स्रोतों पर सबसे अधिक जागरूकता है, जबकि अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता कम है। प्रस्तुत तालिका में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के परिवार की राजनैतिक और प्रशासनिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है।

तालिका 6: निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की पृष्ठभूमि

पृष्ठभूमि	संख्या	प्रतिशत
ग्राम पंचायत सदस्य	55	16.92
पंचायत समिति सदस्य	60	18.47
जिला परिषद सदस्य	55	16.92
विधानसभा सदस्य	20	6.16
संसद सदस्य	10	3.07
राजनीतिक दल सदस्य	100	30.77
स्वयं सहायता समूह सदस्य	25	7.69
कुल	325	100

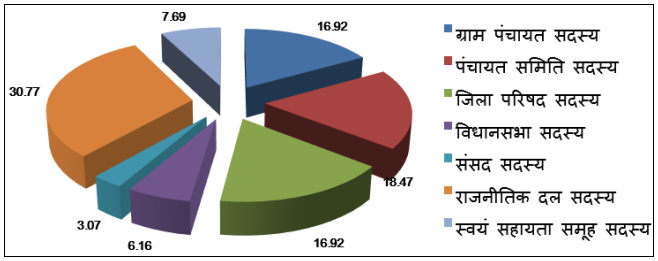

चित्र 2: निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के परिवार की पृष्ठभूमि (प्रतिशत)

तालिका के अनुसार, 55 (16.92 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य ग्राम पंचायत सदस्य के रूप में रह चुके हैं, 60 (18.47 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य पंचायत समिति सदस्य के रूप में रह चुके हैं, 55 (16.92 प्रतिशत) महिला

प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य जिला परिषद सदस्य के रूप में रह चुके हैं। हालांकि, केवल 20 (6.16 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य विधानसभा सदस्य हैं या रह चुके हैं। राजनीतिक दल के सदस्य के रूप में 100 (30.77 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य रह चुके हैं या वर्तमान में हैं। स्वयं सहायता समूह के सदस्य के रूप में 25 (7. 69 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों के परिवार के सदस्य जुड़े हुए हैं। महिलाओं की राजनीतिक पृष्ठभूमि और उनके परिवारों का राजनीतिक अनुभव उनके राजनीतिक सक्रियता को प्रभावित करता है। जिन महिलाओं के परिवारों में पहले से ही राजनीतिक या प्रशासनिक पृष्ठभूमि है, उनके लिए राजनीति में प्रवेश करना और प्रभावी ढंग से कार्य करना आसान होता है। इसके विपरीत, जिन महिलाओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि कमजोर या गैर–राजनीतिक है, उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने में कठिनाई होती है।

प्रस्तुत तालिका में महिला प्रतिनिधियों के प्रेरणा स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। कुल 325 महिला प्रतिनिधियों में आत्म–प्रेरणा सबसे प्रमुख स्रोत है, जिसमें 80 (24.61 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि शामिल हैं। यह दर्शाता है कि महिलाएँ अपने व्यक्तिगत उद्देश्य और आकांक्षाओं से प्रेरित होकर राजनीतिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं। दूसरे स्थान पर पति, परिवार एवं संबंधियों से प्रेरित होने वाली 74 (22.77 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि हैं, जो यह संकेत करता है कि पारिवारिक समर्थन भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तालिका 7: निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के प्रेरणा स्रोत

स्रोत	संख्या	प्रतिशत
आत्म प्रेरणा	80	24.61
पति, परिवार एवं संबंधियों से प्रेरित	74	22.77
जाति और समुदाय के सदस्य	71	21.85
राजनीतिक दल	70	21.54
एनजीओ	30	9.23
कुल	325	100

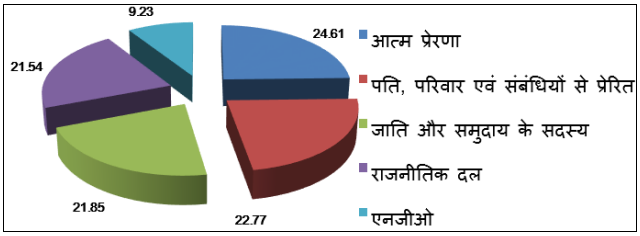

चित्र 3: निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के प्रेरणा स्रोत (प्रतिशत)

जाति और समुदाय के सदस्य से प्रेरित होने वाली 71 (21.85 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि हैं, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक नेटवर्क और समुदाय का भी प्रभाव है। इसके बाद राजनीतिक दल से प्रेरित होने वाली 70 (21.54 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि हैं, जो यह इंगित करता है कि राजनीतिक संगठनों का भी महिलाओं की भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एनजीओ से प्रेरित होने वाली 30 (9.23 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधि हैं, जो दर्शाता है कि गैर–सरकारी संगठनों का भी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में योगदान होता है, लेकिन उनका प्रभाव अपेक्षाकृत कम है। इस प्रकार, आत्म प्रेरणा और पारिवारिक समर्थन महिला प्रतिनिधियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत हैं, जबकि राजनीतिक दल और एनजीओ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत तालिका में महिला प्रतिनिधियों के समर्थन स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। कुल 325 महिला प्रतिनिधियों में से 170 (52.30 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया कि पति, परिवार और रिश्तेदार का समर्थन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि पारिवारिक समर्थन महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक भागीदारी में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, जिससे उन्हें अपने कार्यों में प्रोत्साहन मिलता है।

तालिका 8: महिला प्रतिनिधियों के समर्थन स्रोत

स्रोत	संख्या	प्रतिशत
पति, परिवार और रिश्तेदार	170	52.30
जाति और समुदाय के सदस्य	85	26.15
राजनीतिक दल के सदस्य	50	15.39
एनजीओ	20	6.16
कुल	325	100

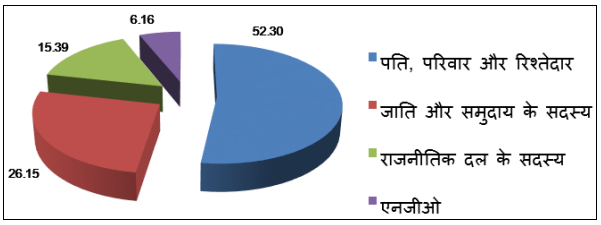

चित्र 4: महिला प्रतिनिधियों के समर्थन स्रोत (प्रतिशत)

दूसरे स्थान पर जाति और समुदाय के सदस्य का समर्थन है। तीसरे स्थान पर राजनीतिक दल सदस्य का समर्थन है, जो यह दर्शाता है कि राजनीतिक संगठनों का भी महिलाओं के लिए कुछ हद तक समर्थन होता है, लेकिन यह संख्या अपेक्षाकृत कम है। गैर–सरकारी संगठनों का प्रभाव इस संदर्भ में सीमित है। यह स्पष्ट है कि महिला प्रतिनिधियों के लिए पारिवारिक और सामाजिक समर्थन अधिक प्रभावी साबित हो रहा है।

निष्कर्ष:

राजस्थान के नीमकाथाना जिले की पंचायतीराज व्यवस्था में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन करने के उपरांत यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। युवा वर्ग की बढ़ती भागीदारी और शैक्षिक स्तर में सुधार सकारात्मक संकेत हैं। हालांकि, सामाजिक वर्गों में असमानता और पंचायती राज से संबंधित कानूनी ज्ञान की कमी चिंता का विषय है। कृषि क्षेत्र की प्रमुखता ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्णता को दर्शाती है। पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि और समर्थन महिला प्रतिनिधियों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आत्म प्रेरणा का उच्च स्तर महिलाओं के बढ़ते आत्मविश्वास का संकेत है। इन सकारात्मक प्रवृत्तियों को और मजबूत करने के लिए नियमित प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण कार्यक्रम और जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:

1. अब्राहम, एस. (2019)। रूरल ग्रोथः ग्रोथ इन रूरल इंडिया डिस्ट्रेस ड्रिवेन। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 15(2), पृष्ठ सं. 45–62।
2. अहमद, एम. (2015)। नॉन गवर्नमेंट ऑर्गेनाइजेशन एंड डेवलपमेंट। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. कुमार, ए.,–गुप्ता, एस. (2023)। डिजिटल युग में पंचायती राज। इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 69(1), पृष्ठ सं. 102–115।
4. चौधरी, पी. (2022)। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और महिला उद्यमिता। सेज पब्लिकेशंस।
5. थॉमस, जी. (2017)। पीपुल्स पार्टिसिपेशन एंड कम्युनिटी

डेवलपमेंट। रूटलेज।
6. पटनायक, आर. (2018)। भारतीय राजनीति पर एक दृष्टि। ओरिएंट ब्लैकस्वान।
7. भटनागर, एस. (2018)। पंचायती राज इन कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट। सेज पब्लिकेशंस।
8. मिश्रा, के.,—सिंह, एल. (2021)। ग्रामीण विकास में महिला नेतृत्वः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 82(3), पृष्ठ सं. 267—284।
9. मुखर्जी, एस. (2016)। सोशियोलॉजी ऑफ इंडियन कल्चर। सेज पब्लिकेशंस।
10. राजेश्वरी, टी. (2020)। पंचायती राज और सामाजिक परिवर्तन। एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 48(4), पृष्ठ सं. 378—395।
11. वेंकटरमन, एम. (2014)। वीमेनः ए माइक्रो पर्सपेक्टिव। हार्पर कॉलिन्स।
12. शर्मा, वी.,—वर्मा, एस. (2021)। पंचायती राज में महिला नेतृत्वः चुनौतियां और समाधान। इंडियन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, 55(2), पृष्ठ सं. 145—162।
13. सिसोदिया, आर. (2022)। महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज। मैकमिलन इंडिया।